PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE 5

स्त्रीओंका सामाजिक व्यावसायिक रूप और दोहरे दायित्व का संघर्ष

डॉ. छाया सुचक
(मनोविज्ञान विभाग)
विजयनगर आर्टस कोलेज,
विजयनगर, जि. साबरकांठा
(गुजरात) महाराष्ट्र

आज महिलाएं सिर्फ घर कीचारदीवारी तक ही सीमित नहीं हैं किन्तु वे घर की जिम्मेदारी संभालने के साथ-साथ देश की आर्थिक तरक्की में भी सहयोग कर रही हैं । जीवन के हर क्षेत्र में आज कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ रही है । आज वे शिक्षण और चिकित्सा के अलावा प्रबंधन, मीडिया, प्रशासक, पुलिस, सेना, वायुसेना, नौसेना और वकालत के क्षेत्र में जा रही हैं । मुंबई की जीवन-रेखा कही जाने वाली लोकल ट्रोनों को औरतें चला रही हैं तो दिल्ली में वे ओटोरिक्शा भी चला रही हैं । दिल्ली सहित देश के दूसरे शहरों में भी युवतियां पेट्रोल पम्पों पर गाड़ियों में पेट्रोल-डीजल भरती आसानी से देखी जा सकती हैं । इसके अलावा खेत-खलिहानों, खदानों, जंगलों और निर्माण के क्षेत्र में तो पहले से ही पुरुषों से ज्यादा काम महिलाएं करती आ रही हैं ।

कामकाजी महिलाएं घर के बाहर जो काम करती हैं, वह तो सबको नजर आता है लेकिन बाहर के साथ-साथ वे जो घर का काम भी करती हैं, वह किसी को नजर नहीं आता या कोई जानबूझ कर कामकाजी औरतों के घरेलू कार्यो को महत्व नहीं देते हैं । कामकाजी महिलाएं घर पर जो काम करती हैं वह अदृश्य श्रम होता है । चूंकि घर का काम वे अपना कर्तव्य मान कर करती हैं इसलिए हमारा पुरुष प्रधान समाज उनके इस काम को कहीं गिनता ही नहीं है और उनकी कर्तव्यपरायणता को उनकी विवशता मान कर नकार देता है । घर और बाहर का यह दोहरा दायित्व केवल

निम्नवर्गीय या मध्यमवर्गीय महिलाओं को ही नहीं उठाना पड़ता है किन्तु उच्च मध्यम वर्ग की महिलाएं भी इसका शिकार हैं ।

ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जिनमें एक साधारण से परिवार की लड़की अपनी मेहनत के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त करती है और फिर ऊंची नौकरी पा जाती है । इन युवतियों के पति भी विभिन्न निजी क्षेत्रों की कंपनियों में उच्च पद पर होते हैं । प्रतिमाह 60-70 हजार से लाख रुपये तक कमाने वाली इन महिलाओं की समस्या भी, श्रमिक औरतों के जैसी हो है । उंची नौकरी के कारण कार्यस्थल पर जिम्मेदारी अधिक होती है और व्यस्तता अधिक होती है । थकी-हारी और दुनियाभर के तनाव के साथ जब वे घर पहुंचती हैं तो घर में उन्हें बच्चे 'माँ' का ओर पति, 'पत्नी' का इंतजार करते मिलते हैं । एकल-परिवारों की इस महानगरीय संस्कृति में घर-परिवार की भी सभी जिम्मेदारियां कामकाजी महिलाओं को ही उठानी पड़ती हैं ।

अध्ययन बताते हैं कि उच्च परिवारों की कामकाजी महिलाएं, व्यवसाय, उद्योग और राजनीति के क्षेत्र में काम कर रही होती हैं तो मध्यम वर्ग की अधिकतर कामकाजी महिलाएं, निजी या सरकारी क्षेत्र में नौकरियां करती हैं । इसी प्रकार निम्न वर्ग की औरतें आमतौर पर कारखानों और निर्माण क्षेत्र में मजदूरी का कार्य करती हैं । हालाकि घर में रहकर परिवार की जिम्मेदारी निभाने वाली महिलाएं भी 15 से 16 घण्टे तक हाड़-तोड़ मेहनत करती हैं, वे परिवार में सबसे पहले उठती हैं और रात में सबको सुलाने के बाद सबसे बाद में सोती हैं । इस सबके बावजूद हम कह सकते हैं कि कामकाजी महिलाओं की जिम्मेदारी अधिक होती हैं उन्हें घर के साथ-साथ दफ्तर में भी खटना पड़ता है । उन्हें एक साथ दो-दो जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है इसलिए कामकाजी महिलाओं की दिक्कतें भी ज्यादा होती हैं ।

नौकरी प्रारंभ करने के आधार पर निदर्श का वर्गीकरण में 240 निदर्शित महिला श्रिकों को नौकरी प्रारंभ करने अर्थात् विवाह के पर्व या विवाह के पश्चात् करने के आधार पर वर्गीकृत किया है । विभिन्न जाति एवं धर्म की महिला श्रमिकों के विवाह के पूर्व नौकरी प्रारंभ करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 22.08 तथा विवाह के पश्चात् नौकरी प्रारंभ करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 77.92 हैं ।

हिंदू सवर्ण महिला श्रमिकों में विवाह के पूर्व नौकरी वाली महिलाओं का प्रतिशत 00.41, विवाह के पश्चात् का प्रतिशत 2.5 है । मुसलमान महिला श्रमिकों में विवाह

के पूर्व नौकरी वाली महिलाओं का प्रतिशत 0.41 तथा विवाह के पश्चात् नौकरी प्रारंभ करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 10.43 प्रतिशत है । अनुसूचित जाती की महिला श्रमिकों में विवाह के पूर्व नौकरी वाली महिलाओं का प्रतिशत 2.09 तथा विवाह के पश्चात् नौकरी प्रारंभ करने वाली का प्रतिशत 11.66 है । आदिवासी महिला श्रमिकों में विवाह के पूर्व नौकरी वाली महिलाओं का प्रतिशत 6.25 तथा विवाह के पश्चात् नौकरी प्रारंभ करने वाली का प्रतिशत 17.08 है । पिछड़ा वर्ग की महिला श्रमिकों में विवाह के पूर्व नौकरी प्रारंभ करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 12.5 तथा विवाह के पश्चात् नौकरी प्रारंभ करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 35 है ।

ब्रिटेन भले ही दुनिया भर में मनवाधिकार और महिलाओं की समस्या को लेकर हायतौबा मचाता है लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि अंग्रजों के इस देश में हर साल तकरीबन 30,000 महिलाओं को मां बनने की कीमत चुकानी पड़ती है । वह भी अपनी आजीविका यानी नौकरी खो कर । ब्रिटेन में हाल ही में किए गए अध्ययन से इसकी पुष्टि हुई है । पश्चिमी यॉर्कशायर के ओसट शहर की पुलिस अधिकारी जेनेट लुंडी को ही ले लीजिए । गर्भवती होते ही जबरदस्ती मेडिकल आधार पर उन्हें सेवानिवृत्ति दे दी गई । पर वह विचलित नहीं हुई और न ही उन्होंने हार मानी । उन्होंने अपने साथ हुए इस लिंग-भेदभाव को लेकर मुकदमा लड़ा और जीत भी हासिल की । इस तरह उन्होंने दूसरी गर्भवती और संभवित गर्भवती स्त्रियों के लिए एक मिसाल कामय की ।

ब्रिटेन की एक फोसेट सोसायटी द्वारा लैंगिक भेदभाव विषय पर करार गए एक अध्ययन में कहा गया कि देश में पिछले एक साल के दौरान करीब 30,000 महिलाओं को उनके गर्भवती होने का खामियाजा भुगतना पड़ा अर्थात उन्हें मां बनने की कीमत अदा करनी पड़ी । सोसाइटी की रिपोर्ट के अनुसार गर्भवती और नई मां बनने वाली महिलाओं के साथ उनके कार्यस्थल पर लिंग-भेदभाव किया जाता है । इस दौरान उन्हें हल्के और सरल कार्यों की जरूरत होती है लेकिन, उनकी इन आवश्यकताओं को नजरअंदाज किया जाता है । इसका परिणाम यह होता है कि अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए महिलाएं अपने कैरियर के साथ समझौते करने के लिए बाध्य हो जाती है । सोसाइटी का कहना है कि उसके द्वारा कराए गए शोध में महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर लिंगभेद बरतने के बहुत बड़े आंकड़े सामने

आए हैं । सोसाइटी ने महिलाओं को इन भेदभावों के खिलाफ आवाज उठाने का आह्वान किया है । सोसायटी ने ब्रिटिश ओलंपिक मंत्री टेसा जावेल के हवाले से कहा है कि कार्यस्थल पर महिलाओं को कई लाभों से वंचित होना पड़ता है । जो फुलटाइम जोब करती है ऐसी महिलाओं को भी पुरुषों के मुकाबले 17 फीसदी कम वेतन दिया जाता है । उनके अनुसार दो तिहाई महिलाओं को कम वेतन पर नौकरी दी जाती है । सोसायटी के अनुसार पुरुष प्रधान लंदन में महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं ।

इस बारे में एक सकून देने वाली बात बस यही है कि महानगरों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति में काफी सकारात्मक सुधार आ रहा है, उनके पति भी उनकी दोहरी जिम्मेदारी में अपना हाथ बंटाने लगे हैं, अब पुरुष भी घर के काम करने लगे हैं, रसोई में खाना बनाने लगे हैं । टेलीविजन चैनल आई.बी.एन. 7 और दैनिक हिन्दुस्तान द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण के मुताबिक, 67 फीसदी भारतीय मानते है कि कामकाजी महिलाएं अपने पारिवारिक दायित्वों को भी पूरे समर्पण भाव के साथ निभाती हैं । वैसे हर 3 में से एक व्यक्ति यह राय रखता है कि कार्यालय का कामकाज, महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियों के आड़े आता है । दोहरी भूमिका कि वजह से महिलाए अपना वजुद एवम् व्यक्तित्व का दोहरा संघर्ष कर रही है । जिनकी वजह से वो खुदको कई जगह रोल प्ले में न्यायीक वर्ताव न करने पर खुद गिल्ट फिल करती है । खुद को समायोजीत करना बहुत कठीन एवम् मुस्कील कार्य है । फिर भी वह दोनो दायित्व के लिए जुजती हुई अपनी जिम्मेदारीयाँ नीभा रही है ।

संदर्भः

1. कामकाजी महिलाएं (वास्तविक स्थिति), डो. रेणु त्रिपाठी, डो. अर्पणा त्रिपाठी, खुशी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली - 22
2. सेक्सस्युल उत्पीड़न और महिलाए, नई दिल्ली ।
3. www.google.role of women in femily
4. www.moatherhood and career : Can't They go to gather ? Juhichavla Interview